# सत्संग का महत्व

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,**
**पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

सत्संग का अर्थ है–अच्छे इन्सान की संगति करना, अच्छे पुरुष के गुणों को ग्रहण करना अपने आत्मा का ज्ञान करना और अपने अस्तित्व को जानना सत्संगति है। सनातन सत्य को जानना और मानना भी सत्संगति है। जीवन की वास्तविकता को जानना सत्संगति है। सत्संगति स्वाध्याय से जुड़ा है। मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्याय और केवल पांच प्रकार के ज्ञान हैं। इनसे आत्मा के साथ संगति होती है। सूर्य के सामने जब बादल आ जाता है तो सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर नहीं आ पाता। जैसे ही बादल हटता है सूर्य का प्रकाश दिखलाई देने लगता है।

व्यक्ति सत्संगति से जाना पहचाना जाता है। सज्जनों की संगति सत्संगति कहलाती है। यदि हम अच्छे व्यक्ति के पास बैठते हैं तो सज्जनता आती है। यदि दुष्टों की संगति करते हैं तो बुरी आदतें स्वभाव में आ जाती है। किसी नसेड़ी के पास बैठते हैं तों नशा का दुर्गुण स्वभाव में आ जाता है। संगत ही मनुष्य को अच्छा या बुरा बना देती है। अच्छे परमाणु जहां पर बिखरे होते है। वहां पर शान्ति और सद्भाव का वातावरण होता है। जहां पर बुरे परमाणु बिखरे होते हैं वहां जाने पर स्वभाव में दुष्टता आ जाती है।

सत्संगति से विनम्रता आ जातीी है। सत्संगति वह ज्ञान है जो मनुष्य को ऊपर उठाता है। कुमार्ग को त्यागकर सन्मार्ग पर चलना सिखाता है। सत्संगति एक छोटे से व्यक्ति को महान पुरुष बना देती है। सत्संगति एक ऐसा मार्ग है जिस पर चलकर शत्रु को भी मित्र बनाया जा सकता है। सत्संगति जीवन में आमूलचूल परिवर्तन कर देती है। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का परीक्षण सत्संगति के आधार पर किया जा सकता है।

जब हम मन्दिरों में जाते हैं तो हमारे मन में बुरा विचार नहीं आता। वहां पर अच्छे परमाणु बिखरे रहते हैं। जब कहीं सज्जनों की संगति में बैठते हैं तो वहां अच्छे–अच्छे विचार सुनने को मिलते हैं जिससे मन में सकारात्मक भाव पैदा होता है। सत्संगति का अर्थ है अच्छे व्यक्तियों की संगति में रहना। जिसके अंदर विकास की प्रवृत्ति हो जिसके अन्दर अच्छे गुण हो, उनके साथ रहने से चारित्रिक विकास होता है। कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो कुसंगति देते हैं।

जो परोपकार और धार्मिक विचार वाले होते है, वे स्वकल्याण के साथ परकल्याण करते हैं। संस्कारों की संगति को सत्संगति कहा जाता है। जो व्यक्ति स्वकल्याण के साथ परकल्याण की भावना रखता है, जो अपने विकास के साथ–साथ दूसरों के विकास की कामना करता है उसके साथ रहने से मानव का विकास होता है। सत्संगति अच्छी संगति है। अच्छी और बुरी संगति करना अपने ऊपर निर्भर करता है। किसान बीज बोने में स्वतन्त्र है किन्तु जैसा बीज बोया है वैसा ही परिणाम आयेगा।

भाव जैसा रहेगा विचार भी वैसा हो जायेगा। भाव अमूर्त्त और एक आन्तरिक प्रक्रिया है। भाव नहीं बिगाड़ना चाहिए। यह कर्मबीज कहलाता है। कर्मबीज के बपन से उसका परिणाम हमें मिलता ही है। सत्संगति स्वभाव है। अपनी प्रकृति के अन्दर परिवर्तन करना, आत्मनिरीक्षण करना हमारा स्वभाव है। शांति, दया, मैत्री, सहयोग, प्रेम स्वभाव हैं। राग–द्वेष, हिंसा, ईर्ष्या ये सब विभाव हैं। स्वभाव और विभाव दोनों मनुष्य में रहते हैं। आत्मा कभी स्वभाव में रहती है और कभी विभाव में। जन्म–जन्मान्तर में हमने जो कर्म किया है वह कभी–कभी उदय में आता है। आचार–विचार और व्यवहार की प्रवृत्ति शुद्ध होनी चाहिए। जब आत्मा निज स्वरूप में आ जाती है तो विभाव समाप्त हो जाता है।

वेदान्त में जीव और ब्रह्म की एकता का वर्णन है। जीव को जब ब्रह्म का ज्ञान हो जाता है तो वह शुद्ध, बुद्ध और मुक्त हो जाता है। जिसकी संगति करने से लाभ हो हानि न हो उसकी संगति करनी चाहिए। गुरु की संगति करनी चाहिए, क्योंकि गुरु अज्ञान को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। व्यक्तित्व विकास के लिए सत्संगति आवश्यक है। सत्संगति बुद्धि की

जड़ता को हर लेती है, वाणी में सत्य का संचार करती है, चारों दिशाओं में यश को फैलाती है और पाप को दूर करके शुद्ध मानव बनाती है। अपने से श्रेष्ठ लोगों की संगति करनी चाहिए।

वरिष्ठ नागरिक जो अनुभव का खजाना है उसके पास बैठकर ज्ञान लेना चाहिए। उनसे अच्छी बाते सीखनी चाहिए। ज्ञान को आचरण में उतारना चाहिए। जो सबको साथ लेकर चल सके उसकी संगति करनी चाहिए। माता बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है। बच्चों को माता–पिता की बातों को मानना चाहिए। माता–पिता ही सबसे पहले गुरु है। उन्हीं से ही बच्चा सीखने लगता है। अभिमन्यु ने अपने माता के गर्भ में ही ज्ञान सीखना प्रारम्भ कर दिया था। माता अपने बच्चों को महान बनाना चाहती है। गर्भिणी स्त्री को अच्छे–अच्छे प्रवचन सुनना चाहिए। मन में रचनात्मक भावों को लाना चाहिए और सदैव प्रसन्न रहना चाहिए। जिससे उसके गर्भ में पलने वाला बच्चा स्वस्थ और रचनात्मक बुद्धि का हो सके।

युवाओं के लिए यह विषय विशेष प्रासंगिक है। सत्संगति और कुसंगति दोनों समाज में है। सत्संगति उत्थान और कुसंगति पतन का कारण है।